पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 16.10.2025 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-42 अंक-10 कार्तिक-2082 दयानन्दाब्द 201 16 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2025 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.10.2025, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

जहां नहीं होता कभी विश्राम ओ३म् आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली

142वें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बलिदान दिवस पर

एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम

रविवार, 26 अक्टूबर 2025, शाम 4.00 से 8 बजे तक

स्थान: आर्य समाज पंजाबी बाग विस्तार (क्लब रोड), दिल्ली-110026

यज्ञ: सायं 4 से 5 बजे तक, ब्रह्मा: आचार्या विमलेश बंसल 'दर्शनाचार्या'

मुख्य यजमान: सर्व श्री डॉ. (कर्नल) विपिन खेड़ा, वीरेश बुग्गा, करुणा-तिलक चांदना, डॉ. राजीव चावला

गायक कलाकार

आचार्य देव आर्य नरेन्द्र आर्य 'सुमन' प्रवीन आर्या 'पिंकी'

मुख्य अतिथि : श्रीमती कमलजीत सहरावत (सांसद), कैलाश गंगवाल (विधायक) सुमन त्यागी (पार्षद)

अध्यक्षता: श्री सत्यानंद आर्य (संरक्षक, आर्य समाज पश्चिमी पंजाबी बाग)

विशिष्ट अतिथि : श्री आनन्द चौहान, यशपाल आर्य (पूर्व पार्षद), सुषमा-विजय पाहुजा

गरिमामय उपस्थिति: सर्वश्री आर.पी. सूरी, अशोक सूरी, ठाकुर विक्रम सिंह, हीरालाल चावला, ओम सपरा, यशोवीर आर्य, लायन प्रमोद सपरा, रवि चड्डा, जितेन्द्र खरबंदा, सुरेन्द्र मानकटाला, के.एल. राणा, कस्तूरीलाल मक्कड़, राजेन्द्र लाम्बा, नरेश गुलाटी, प्रेम छाबड़ा, शशि तुली, अमरनाथ बत्रा, भूपेन्द्र कुमार, ओमवीर सिंह, भोपालसिंह आर्य, अमरसिंह आर्य, संजय सपरा, ओमप्रकाश अरोड़ा, सुरेन्द्र गुप्ता, धर्मपाल परमार, अंजू जावा, नरेन्द्र अरोड़ा, राजेन्द्र दुर्गा, सोहनलाल आर्य, अरूण आर्य, संजीव महाजन, कृष्णा पाहुजा, ओमप्रकाश गुप्ता, सुदेश डोगरा, आस्था आर्या, सुनील गुप्ता, ओमप्रकाश नांगिया, प्रेम सचदेवा, जीवनलाल आर्य, सुशील बाली, आदर्श आहुजा, गायत्री मीना, उर्मिला-महेन्द्र मनचंदा, अनिता ग्रोवर, राजेश मेहन्दीरत्ता, कुसुम भंडारी, सुनीता बुग्गा, सोनिया संजू, राधा भारद्वाज, रजनी गर्ग, डिम्पल-नीरज भंडारी, सीमा-रोहित ढींगरा, सन्तोष कुमार, यशपाल आर्य, प्रवीण तायल (ब्रिज एवं कम्पनी), सोनल सहगल, संतोष वधवा, कृष्णा गांधी-बी.डी. गांधी, सुरेन्द्र बुद्धिराजा, चन्द्रमोहन कपूर, चन्द्रमोहन खन्ना, नेत्रपाल आर्य, राकेश मल्होत्रा, इंद्रा शर्मा, राकेश आर्य, सुरेश टण्डन, ज्योति ओबराय, विनीता चावला, अजय तनेजा, विजय कपूर, किरण सहगल, देवेन्द्र आर्य बन्धु, माया राम शास्त्री, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, वेदपाल आर्य, विक्रांत चौधरी, सुरेन्द्र गम्भीर, मानवेन्द्र शास्त्री, रामफल खर्ब, सुरेन्द्र कोछड़।

आर्य महिला रत्न अवार्ड से सम्मानित होगें

श्रीमती लता नारंग
श्रीमती आशिमा सक्सेना
श्रीमती सुमन आर्या
श्रीमती विद्योतमा झा
श्रीमती रेणुका ठुकराल
श्रीमती प्रतिभा सपरा
श्रीमती सुनीता गोस्वामी
श्रीमती मुकेश देवी
श्रीमती नीरू कपूर
श्रीमती मनीषा ग्रोवर
श्रीमती सावित्री चावला
श्रीमती सविता ढींगरा
श्रीमती वीना गुप्ता
श्रीमती संगीता वधवा

आमंत्रित आर्य नेता: सर्व श्री अशोक कथूरिया, सोमनाथ पुरी, संजीव गर्ग, नरेन्द्र कस्तूरिया, मीना आर्या, किरण सेठी, रेणू-डालेश त्यागी, अशोक गुप्ता, मैथिली शर्मा, आनन्द प्रकाश गुप्ता, संजीव आर्य, प्रि. अंजू महरोत्रा, प्रोमिला गुप्ता, विजय हंस, नम्रता रहेजा, संजीव सेठी (फरन्टीयर बिस्कुट), सोहनलाल मुखी, प्रकाशचंद आर्य, माता शीला ग्रोवर, अमित मान, अनीता कुमार, अशोक आर्य, नरेश विज, शारदा कत्याल, आदर्श सलूजा, अनिल अरोड़ा, डॉ. विशाल आर्य, कृष्णकुमार यादव, सुरेश आर्य, गोपाल आर्य, सुदेश भगत, वीरेन्द्र आहूजा, गजेन्द्र आर्य, स्वर्णा सेतिया, देवेन्द्र गुप्ता, दशरथ भारद्वाज, प्रहलाद सिंह, महेश शर्मा, अजय चौधरी,

आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं

ऋषि लंगर रात्रि : 8 बजे, प्रबन्धक: शिवम मिश्रा, गौरव झा, वरूण आर्य, रोहित सिंह, काशीराम

–: निवेदक :–

अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष
महेन्द्र भाई, राष्ट्रीय महामंत्री
धर्मपाल कुकरेजा, प्रधान
एस.के. छतवाल, कार्यकारी प्रधान
एस.एस. राणा, मंत्री
पी.एस. दहिया, कोषाध्यक्ष
दुर्गेश आर्य, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
सुरेश आर्य, देवेन्द्र भगत, राष्ट्रीय मंत्री
प्रवीण आर्य, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
संतोष शास्त्री, हर्षदेव शर्मा, राष्ट्रीय मन्त्री
अनिल कपूर, सुनील सहगल, प्रबन्धक
रामकुमार सिंह, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
धर्मपाल आर्य, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
वेदप्रकाश आर्य, राष्ट्रीय मन्त्री
अरूण आर्य, सौरभ गुप्ता, यज्ञवीर चौहान, वीरेश आर्य, अवनीश, प्रबंधक गण

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9810117464, 9013137070, 9958889970
E-mail: aryayouthn@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com
Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com join-http://www.facebook.com/group/aryayouth

यदि ऋषि दयानन्द न आते तो संसार में वेदों के सत्य अर्थों का प्रकाश व प्रचार न होता

–मनमोहन कुमार आर्य

महाभारत युद्ध के बाद न केवल देश में अपितु विश्व में अज्ञान छा गया था। महाभारत का युद्ध लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व हुआ। महाभारत के बाद यज्ञों में पशु हिंसा आरम्भ हुई थी। समय के साथ यज्ञों में विकृतियों में वृद्धि होती गई। वेदों के अध्ययन–अध्यापन की परम्परा भी धीरे–धीरे समाप्त होती गई। महाभारत के बाद वेदों के जो विद्वान व भाष्यकार हुए, उन्होंने वेदों के जो अर्थ किये हैं, वह वेदों के सत्य वेदार्थ न होकर व्याकरण की दृष्टि से अनेक दोषों से युक्त थे। वेदाध्ययन में अवरोध तथा वेदों के मिथ्यार्थों के प्रचार से देश व समाज में अन्धविश्वासों व मिथ्या परम्पराओं का प्रचलन हुआ। समाज में जन्मना जातिवाद का आरम्भ भी महाभारत युद्ध के बाद ही हुआ। अन्धविश्वासों में मुख्य बातें निराकार व सर्वव्यापक ईश्वर के स्थान पर साकार मूर्ति को बनाकर पूजा करना, मिथ्या फलित ज्योतिष, ईश्वर के अवतार की कल्पना, मृतक स्त्री–पुरुषों का श्राद्ध, स्त्री व शूद्रों को वेदाधिकार से वंचित करना और यदि वह सुन लें व वेदमन्त्र का उच्चारण करें तो उन्हें अमानवीय दण्ड देना, विधवाओं की दुर्दशा, आर्य शब्द का प्रयोग छोड़ कर हिन्दू शब्द को अपनाना, छुआछूत, ऊंच–नीच आदि भेदभाव, आर्य–हिन्दुओं में मांसाहार का प्रचलन, अनमेल व बाल विवाह, शिक्षा के महत्व को भुला देना आदि दोष देश व समाज में वृद्धि को प्राप्त होते गये जिससे समाज व देश कमजोर होकर विदेशी व विधर्मियों का दास बन गया। इन बुराईयों में एक बुराई यह भी थी कि समाज में नारियों को सम्मानजनक स्थान नहीं दिया जा रहा था। समाज में सामर्थ्यवान लोग अशिक्षित होने के साथ स्त्री व पुरुषों के प्रति शोषण एवं अन्याय का व्यवहार भी करते थे। इस स्थिति के जो हानिकारक भयंकर परिणाम हो सकते थे वह सब समाज में घट रहे थे। ऐसे समय में ऋषि दयानन्द (1825–1883) का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने किसी भी धार्मिक एवं सामाजिक परम्परा को मानने से पूर्व उसे अपनी बुद्धि से समीक्षा कर सत्य होने पर ही स्वीकार किया। उन्होंने वेदों के गहन अध्ययन एवं मीमांसा करने पर पाया कि जो भी वेद विरुद्ध है, वह अग्राह्य एवं आचरण करने योग्य नहीं होता है तथा जो वेदानुकूल है वह स्वतः प्रमाण है और उसे हम जीवन में आचरण करके अपने जीवन को उन्नत कर सकते हैं। ऋषि दयानन्द को समाज में प्रचलित जो मिथ्या विचार व मान्यतायें प्रतीत हुईं उसका उन्होंने त्याग किया व देश व समाज के लोगों से कराया भी।

ऋषि दयानन्द को बाल्यकाल में 14 वर्ष की आयु में मूर्तिपूजा करते हुए मूर्ति में किसी प्रकार की दैवीय शक्ति के होने व उसकी पूजा व उपासना से मनुष्य की किसी प्रार्थना व इच्छा के पूरे होने पर सन्देह हो गया था। इसका समुचित समाधान प्राप्त न होने पर उन्होंने मूर्तिपूजा को छोड़ दिया था। इसके बाद उनकी अपनी बहिन तथा चाचा की मृत्यु हो जाने पर उन्हें मृत्यु के स्वरूप को जान कर उस पर विजय पाने की तीव्र जिज्ञासा एवं अभिलाषा उत्पन्न हुई थी और इससे उनमें वैराग्य उत्पन्न हुआ था। इन कारणों से उन्होंने गृह त्याग कर और देश–देशान्तर में घूम कर विद्वानों व योगियों की संगति की और उनसे अध्ययन करने व ज्ञान प्राप्ति सहित योगाभ्यास सीख कर ईश्वर का प्रत्यक्ष किया था। यद्यपि उन्होंने अपने पितृ–गृह में रहते हुए ही संस्कृत भाषा व इसके व्याकरण के अध्ययन सहित यजुर्वेद को कण्ठ कर उसका अध्ययन किया था और गृह–त्याग के बाद लगभग 14 वर्षों तक विद्वानों व योगियों की संगति करते रहे थे, परन्तु उनकी विद्या व ज्ञान की पिपासा शान्त नहीं हुई थी। इसे पूर्ण करने के लिये वह सन् 1860 में प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य प्रज्ञाचक्षु गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से विद्या वा वेदागों का अध्ययन करने मथुरा आये थे। गुरु के चरणो में तीन वर्ष रहकर स्वामी दयानन्द जी ने व्याकरण के ज्ञान सहित गुरु जी से अनेक विषयों का अध्ययन व मार्गदर्शन प्राप्त किया था। तीन वर्षों में अपना अध्ययन पूरा कर गुरु जी की प्रेरणा से उन्होंने देश व समाज से अविद्या अन्धकार दूर करने सहित वेदों के प्रचार से सर्वत्र विद्या का प्रकाश करने का संकल्प वा प्रतिज्ञा की थी। गुरु विरजानन्द जी के सान्निध्य से विदा लेने के बाद का उनका जीवन वेदों की सत्य मान्यताओं की प्रतिष्ठा करने सहित अविद्यायुक्त अवैदिक मतों, मान्यताओं एवं परम्पराओं के खण्डन में व्यतीत हुआ। उन्होंने अपने अध्ययन एवं योग बल से जाना था कि देश की अवनति व मनुष्यों की अधोगति में सबसे बड़ा कारण मूर्तिपूजा व फलित ज्योतिष आदि अवैदिक मान्यतायें वा परम्परायें हैं। अतः उन्होंने अविद्यायुक्त सभी अवैदिक मान्यताओं की समीक्षा व खण्डन करते हुए समाज सुधार का कार्य किया और मूर्तिपूजा से देश व समाज को मुक्त कराने के लिये अनेक जोखिम भरे कार्य किये जो बाद में उनके बलिदान व मृत्यु का कारण बने। ऋषि दयानन्द ने जोधपुर में वेद प्रचार के लिये जाते हुए अपने भक्तों, मित्रों वा सहयोगियों को अपना यह निश्चय भी बताया था कि यदि सत्य बोलने के कारण उनकी उंगलियों को लोग दीपक की बाती बना कर जला भी दें, तो भी सत्य बोलने व सत्य का प्रचार करने से वह किंचित भी विचलित नहीं होंगे। सत्य के प्रति ऐसी आस्था संसार में किसी महापुरुष में देखने को नहीं मिली। उनके जैसा वेदों का विद्वान, वेद प्रचारक, समाज सुधारक तथा अनेक प्रकार से समाज को अन्ध विश्वासों से मुक्त कर उन्हें सत्य ज्ञान से युक्त करने वाला महापुरुष संसार में नहीं हुआ। हमें लगता है कि स्वामी दयानन्द जी पर 'न भूतो न भविष्यति' की उक्ति पूरी तरह से चरितार्थ होती है। स्वामी दयानन्द का भारत में जन्म लेना और वेदों का प्रचार करना देश व देशवासियों के लिये वरदान सिद्ध हुआ। यदि वह न आते तो न तो वैदिक धर्म की रक्षा होती, न समाज सुधार के कार्य होते और न ही देश स्वतन्त्र होता। यह बता दें कि ऋषि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम सन् 1883 में स्पष्ट शब्दों में स्वदेशी राज्य के सर्वोपरि उत्तम होने की सबल शब्दों में सत्यार्थप्रकाश में घोषणा की थी। उन्होंने कहा था कि विदेशी राज्य कितना भी अच्छा क्यों न हो वह स्वदेशी राज्य से उत्तम नहीं हो सकता।

ऋषि दयानन्द ने सन् 1863 में गुरु विरजानन्द जी से अध्ययन पूरा कर सामाजिक कार्यों में प्रवेश किया और वेद प्रचार को प्रमुख स्थान दिया। वह वेदविरुद्ध मान्यताओं व परम्पराओं का खण्डन करते थे और सत्य पर आधारित ईश्वर की आज्ञाओं व मान्यताओं का मण्डन करते थे। स्वामी दयानन्द जी ने वेदविरुद्ध मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, स्त्री व शूद्रों का वेदाध्ययन में अनधिकार, बाल विवाह, अनमेल विवाह, विधवाओं के प्रति समाज की अवैदिक भावनाओं सहित जन्मना जातिवाद, छुआछूत, ऊंच–नीच आदि का खण्डन किया और इनके विकल्प प्रस्तुत किये। उन्होंने ईश्वर की सच्ची पूजा करने की विधि अपनी 'सन्ध्या' नाम की पुस्तक में प्रदान की। मनुष्य के दैनिक व्यवहारों के कारण वायु व जल सहित पर्यावरण का प्रदुषण होता है। इसको दूर करने का साधन अग्निहोत्र यज्ञ है। इसकी विधि व प्रचार भी ऋषि दयानन्द ने किया। देश से अशिक्षा दूर करने के लिये उन्होंने प्राचीन गुरुकुलीय पद्धति को प्रचलित करने का प्रचार किया। स्वामी जी की प्रेरणा के अनुसार उनके प्रमुख अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द तथा स्वामी दर्शनानन्द आदि ने अनेकानेक गुरुकुलों की स्थापना कर वेदों पर आधारित शिक्षा वेदांगों के अध्ययन–अध्यापन का कार्य किया। 6 वेदांगों के अध्ययन से ही मनुष्य को वेदों के मन्त्रों के सत्य अर्थ जानने की योग्यता आती है। ऋषि दयानन्द ने अवैदिक मिथ्या परम्पराओं व प्रथाओं को दूर करने के लिये विपक्षियों को शास्त्रार्थ एवं वार्तालाप की चुनौती भी दी। काशी में उनके द्वारा लगभग 30 शीर्ष पण्डितों से मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ किया गया जिसमें पण्डितों के वेदों से संबंधित अज्ञान वा अल्पज्ञान को उन्होंने प्रजाजनों के सम्मुख प्रकट किया। अपने अनुयायियों के अनुरोध पर सन् 1875 में उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ' लिखा व प्रकाशित कराया जिसमें प्रायः समस्त वा अधिकांश वैदिक मान्यताओं को तर्क एवं युक्तियों सहित वेद एवं अन्य शास्त्रों के प्रमाणों के साथ प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही इस ग्रन्थ में अवैदिक मतों का सप्रमाण खण्डन वा समीक्षा भी की गई है। स्वामी दयानन्द जी ने वेद प्रचारार्थ अनेकानेक ग्रन्थों का प्रणयन किया। उनके अनेक कार्यों में वेदों का संस्कृत व हिन्दी भाषा में भाष्य व अनुवाद सत्यार्थप्रकाश के समान व इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण प्रमुख कार्य है। सृष्टि के आरम्भ से ऋषि दयानन्द के समय तक चारों वेदों का पूर्ण प्रामाणिक व सत्य अर्थों से युक्त भाष्य संस्कृत, हिन्दी व किसी अन्य भाषा में उपलब्ध नहीं था। सायण व महीधर आदि भाष्यकारों के जो भाष्य थे उनमें अनेक न्यूनतायें एवं त्रुटियां थीं, अनेक वेद विरुद्ध मान्यताओं का समावेश था, जिनका दिग्दर्शन ऋषि दयानन्द ने अपने वेदभाष्य सहित ऋग्वेदभाष्यभूमिका ग्रन्थ में किया है।

ऋषि दयानन्द जी का वेदभाष्य संस्कृत व हिन्दी दोनों भाषाओं में है। सृष्टि के आरम्भ से ऋषि दयानन्द के समय तक ऐसा प्रामाणिक एवं मनुष्यों का

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक सम्पन्न

रविवार 21 सितम्बर 2025, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की दो दिवसीय साधारण सभा की बैठक आर्य समाज शालीमार बाग (पश्चिम) दिल्ली में सभा प्रधान स्वामी आर्य वेश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी यतीशवरा नंद, स्वामी ओम वेश, स्वामी आदित्य वेश, गोबिंद सिंह भण्डारी आदि उपस्थित थे। चित्र में सभा के उपप्रधान अनिल आर्य संबोधित करते हुए, सभा मंत्री प्रो. विठ्ठल राव ने कुशल संचालन किया।

आर्य समाज महावीर नगर व आर्य समाज संदेश विहार का उत्सव सम्पन्न

प्रथम चित्र में रविवार 5 अक्टूबर 2025, आर्य समाज महावीर नगर दिल्ली का वार्षिकोत्सव यशपाल आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। चित्र में अनिल आर्य को सम्मानित करते मंत्री मायाराम शास्त्री जी। द्वितीय चित्र में रविवार 12 अक्टूबर 2025, आर्य समाज संदेश विहार दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ चित्र में प्रधान दुर्गेश आर्य व मंत्री डॉ विशाल आर्य को सम्मानित करते अनिल आर्य साथ में सुरेश आर्य व विजेन्द्र आनंद।

हिसार में ईश आर्य का भव्य अभिनंदन

मंगलवार 30 सितम्बर 2025 , परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ईश आर्य के सरकारी सेवा से सेवा निवृत्त होने पर भव्य समारोह का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने सपरिवार सम्मिलित होकर शुभकामनाएं प्रदान की।

उनकी तुरबत पर नहीं एक भी दिया, जिनके खूँ से जले थे चिरागे वतन।
आज महकते है मकबरे उनके, जिन्होंने बेचे थे शहीदों के कफन।।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की केन्द्र सरकार से माँग

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन

नया बाजार दिल्ली को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करो

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 742वां वेबिनार सम्पन्न

साध्य, साधन, साधक और साधना विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी सम्पन्न

पर्व हमारे जीवन में नयी ऊर्जा देते हैं –विमलेश बंसल दर्शनाचार्या

सोमवार 6 अक्टूबर 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'साध्य, साधन और साधक साधना' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 741 वाँ वेबिनार था। वैदिक विदुषी विमलेश बंसल दर्शनाचार्या ने कहा कि भारत की ऋतु चक्र की तरह हमारे पर्व भी जीवन को नई ऊर्जा और दिशा देते हैं।साध्य, साधन, साधक और साधना कृये चारों ही तत्व हमारी संस्कृति की आत्मा हैं। नवरात्रि के नौ दिन आत्मबल और भक्ति के साधन हैं, रामनवमी आदर्श जीवन का साध्य है, राम उत्सव साधक की तपस्या और विजय की प्रेरणा है, तो दशहरा बुराई पर अच्छाई की साधना का उत्सव है। परिवर्तित होती ऋतु हमें यही संदेश देती है कि जीवन का हर परिवर्तन साधना के माध्यम से साध्य की ओर बढ़ने का अवसर है। **'साध्यं साधनसम्पन्नं साधकस्य प्रयासतः। साधना चौव धर्मोऽयं नयत्येव परं पदम्॥'** (अर्थ– जब साधक उचित साधनों से साध्य की ओर साधना करता है,तो वही धर्म उसे परम पद तक पहुँचाता है।) दोहा **'साध्य–साधक संग मिले, साधन साधे चार। साधना से मिलत है, जीवन का सत् सार।।'** इस प्रकार हमारे पर्व केवल उत्सव नहीं,बल्कि साधना के पथ पर बढ़ने की प्रेरणा हैं। साध्य को पाने के लिए साधक जब साधनों का सही उपयोग करता है, तभी उसका जीवन साधना से ओत–प्रोत होकर समाज और संस्कृति का पथ प्रदर्शक बन जाता है।आओ हम सब सच्चे साधक बनकर अपनी साधना को बढ़ाएं जिससे साध्य को प्राप्त कर सकें। मुख्य अतिथि अनिता रेलन व अध्यक्ष कुसुम भंडारी ने भी कर्म करने पर बल दिया। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया।प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कमला हंस, जनक अरोड़ा, प्रवीना ठक्कर, रविन्द्र गुप्ता, कौशल्या अरोड़ा आदि के मधुर भजन हुए।

अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षक दिवस पर जींद में शिक्षक सम्मान सम्पन्न

केंद्रीय आर्य युवक परिषद जींद के तत्वावधान में 5 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय शिक्षक दिवस पर 80 शिक्षकों को सम्मानित किया गया इस समारोह में मुख्य अतिथि डॉक्टर कृष्ण लाल मीढा के प्रतिनिधि राजन चिल्लाना ने अपने वक्तव्य में कहा की अध्यापक राष्ट्र निर्माता है इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे केंद्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ईश कुमार आर्य ने सरकार से आग्रह किया की पाठ्यक्रम में योग और नैतिकता शामिल किया जाए कार्यक्रम के संयोजक श्री कृष्ण दहिया ने बताया कि हम प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय शिक्षक दिवस पर उत्कृष्ट शिक्षकों को सम्मानित करते हैं ताकि यह शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में समाज के लिए आधार स्तंभ सिद्ध होंगे। इस कार्यक्रम में श्री रणवीर सिंह लोहान श्री सूर्यदेव आर्य जयप्रकाश दहिया विमलेश दहिया सिद्धांत आर्य अभिषेक दहिया सीमा दहिया तथा ज्योति आर्य विशेष रूप से उपस्थित रहे।

(पृष्ठ 2 का शेष)

हितकारी व कल्याणकारी वेदभाष्य का कार्य किसी विद्वान वा ऋषि का उपलब्ध नहीं होता। हिन्दी में भाष्य भी वेदों का भाष्य अर्थात् वेदमन्त्रों के पदार्थ व भावार्थ करने की सूझ उनकी अपनी थी जिसका लाभ संस्कृत से अनभिज्ञ साधारण मनुष्यों को मिला जो बोलचाल की हिन्दी भाषा को पढ़ने की साधारण सी योग्यता रखते हुए भी वेदों का गहन अध्ययन कर उसकी मान्यताओं, सिद्धान्तों व शिक्षाओं से सुपरिचित हुए। हम भी ऐसे ही व्यक्तियों में सम्मिलित हैं जिन्होंने हिन्दी भाषा के माध्यम से वेदों के गहन अर्थों व सिद्धान्तों को जाना व समझा है। वेदों के अध्ययन से मनुष्य ईश्वर व जीवात्मा के सत्यस्वरूप व कर्तव्यों को जानकर उनके अनुसार अपना जीवन बनाकर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति में अग्रसर होता है। वह अविद्या दूर करने एवं विद्या की वृद्धि करने सहित समाज सुधार वा समाज उत्थान के कार्यों में भी प्रवृत्त होता है। वह एक दीपक बन जाता है जो अपने जीवन से अज्ञान व अविद्या को हटाकर दूसरे सहस्रों लोगों के जीवन का अज्ञान व अविद्या को भी हटा सकता है।

वेदों का हिन्दी भाषा में भाष्य तथा सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों की लोकभाषा हिन्दी में रचना ऋषि दयानन्द का मानव जाति पर बहुत बड़ा उपकार है जिससे कोई मनुष्य कृतज्ञ नहीं हो सकता। ऋषि दयानन्द जी का वेदभाष्य अपूर्व एवं अत्यन्त प्रशंसनीय है। उनके बाद उनके अनेक शिष्यों ने सरल हिन्दी भाषा में वेदों के भाष्य किये हैं। इससे ज्ञान की दृष्टि से सामान्य कोटि के व्यक्ति लाभान्वित होते हैं। ऋषि दयानन्द के शिक्षा विषयक विचारों से उनके अनुयायियों ने जो गुरुकुल व संस्कृत की पाठशालायें स्थापित की, उनमें संस्कृत के बड़ी संख्या में विद्वान तैयार हुए जिन्होंने देश–देशान्तर में वेद प्रचार कर संसार का उपकार व कल्याण किया है। ऋषि दयानन्द के संसार व इसके सभी मनुष्यों पर अनेकानेक उपकार हैं। हम कभी उनके ऋणों से उऋण नहीं हो सकते। यदि ऋषि दयानन्द न आते तो हम वेदों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने व ईश्वर की यथार्थ उपासना करने सहित जीवन में अन्धविश्वासों व अविद्या को दूर करने में सर्वथा असमर्थ रहते। संसार अज्ञान व अविद्या में डूबा रहता जैसा उनके समय में था। इन सब कार्यों के लिये हम ऋषि दयानन्द जी के उपकारों को स्मरण कर उनको सादर नमन करते हैं।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.:** 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक :** दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970